अध्याय
13

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन
सविनय अवज्ञा और उससे आगे

सीखने के प्रतिफल

इस अध्याय में बच्चे राष्ट्रवाद एवं राष्ट्र निर्माण की बातें सीखेंगे। साथ ही साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अहिंसा एवं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उनके योगदान के बारे में जानेंगे।

परिचय :- महात्मा गांधी को भारतीय राष्ट्र का पिता माना गया है।

चुकी गांधी जी स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेने वाले सभी नेताओं में सर्वाधिक प्रभावशाली और सम्मानित हैं।

इस अध्याय में 1915 से 1948 के महत्वपूर्ण काल के दौरान भारत में महात्मा गांधी के गतिविधियों का विश्लेषण किया गया है।

महात्मा गांधी
- पूरा नाम -मोहनदास करमचंद गाँधी
- जन्म -2 अक्टूबर 1869 ई०
- जन्म स्थान - गुजरात के पोरबंदर में
- पिता -करमचंद गाँधी
- माता - पुतलीबाई
- पत्नी - कस्तूरबा गाँधी
- शिक्षा- बैरिस्टर इंग्लैंड से 1893 ई०
- मृत्यु -30 जनवरी 1948 ई० में।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

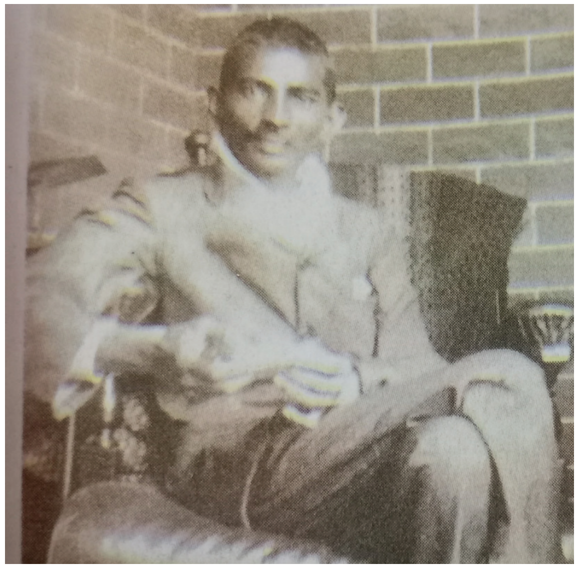

दक्षिण अफ्रीका के जोहेन्सबर्ग में महात्मा गाँधी, फरवरी 1908

दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी का योगदान

- बैरिस्टर की पढ़ाई पूरी करने के बाद महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका चले गए।
- गांधीजी दो दशक यानि 20 वर्ष तक दक्षिण अफ्रीका में रहें।
- वहां वह एक वकील के रूप में गए थे और बाद में इस क्षेत्र के भारतीय समुदाय के नेता बन गए।
- दक्षिण अफ्रीका ने ही गांधी जी को महात्मा बनाया।
- दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी ने पहली बार सत्याग्रह का प्रयोग किया। इनका सत्याग्रह का अर्थ था - अहिंसात्मक विरोध।
- इन्होंने विभिन्न धर्मों के बीच सौहार्द बढ़ाने का प्रयास किया।
- उच्च जातीय भारतीयों को निम्न जातियों और महिलाओं के प्रति भेदभाव वाले व्यवहार के लिए चेतावनी दी।

© JCERT not to be republished

9 जनवरी 1915 को गांधी जी भारत वापस आए।

महात्मा गांधी का भारत वापसी

जब गांधी जी भारत वापस आए तो 1893 के भारत से 1915 के भारत को काफी भिन्न पाया।

अब भारत राजनीतिक दृष्टि से कहीं अधिक सक्रिय हो गया था।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की शाखाएं अधिकांश जगह फैल चुकी थी।

1905-07 के स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने व्यापक रूप से मध्यम वर्ग के बीच अपनी अपील का विस्तार कर लिया था।

हर साल 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस के रूप में मनाया जाता है

उग्रवाद एवं उदारवाद विचारधारा

उग्रवादी विचारधारा

1905-07 के स्वदेशी आंदोलन ने कुछ प्रमुख नेताओं को जन्म दिया जिनमें महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक, बंगाल के बिपिन चंद्र पाल और पंजाब के लाला लाजपत राय हैं। ये तीनों लाल बाल और पाल के रूप में जाने जाते थे

इन नेताओं ने अपनी वैश्विक शासन के प्रति लड़ाकू विरोध का समर्थन किया इस कारण इन्हें उग्रवादी विचारधारा के लोग माने जाते हैं।

उदारवादी विचारधारा

उदार वादियों का एक समूह था जो एक क्रमिक और लगातार प्रयास करते रहने की विचार का हिमायती था

इन उदार वादियों में गोपाल कृष्ण गोखले और मोहम्मद अली जिन्ना थे।

गांधीजी के राजनीतिक परामर्शदाता या गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थे।

गोखले ने गांधी जी को 1 वर्ष तक का ब्रिटिश भारत की यात्रा करने की सलाह दी जिससे कि वे अच्छी तरह से इस भूमि को और इसके लोगों को जान सके।

© JCERT not to be republished

1916 में उद्घाटन समारोह और वार्षिक कांग्रेस में गांधीजी की भागीदारी

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय उद्घाटन समारोह

गांधीजी की पहली महत्वपूर्ण सार्वजनिक उपस्थिति फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में हुई।

इस समारोह मैं उन्होंने भारतीय मजदूर और किसान गरीबों की ओर ध्यान आकृष्ट कराया तथा भारतीय विशिष्ट वर्गों को आड़े हाथों लिया॥।

लखनऊ के कांग्रेस वार्षिक अधिवेशन

दिसंबर 1916 ई0 में लखनऊ में हुई वार्षिक कांग्रेस में बिहार के चंपारण से आए एक किसान ने उन्हें वहां नील उत्पादकों द्वारा किसान के प्रति किए जाने वाले कठोर व्यवहार के बारे में बताया।

गांधीजी को चंपारण आने का न्योता दिया

गांधी जी के आंदोलन की शुरुआत

चंपारण सत्याग्रह (1917 ई0)

आमंत्रित किए जाने पर 1917 में गांधी जी चंपारण (बिहार) गए और नील की खेती (3/20) (तीनकठिया प्रणाली) को बंद करवाया तथा किसानों को अपनी पसंद के फसल उपजाने की आजादी दिलवाई।

गांधी जी भारत में अपने सत्याग्रह का सर्वप्रथम प्रयोग चंपारण से हीं किया।

1918 ई0 में गाँधी जी दो आंदोलन किए

श्रम या मजदूर आंदोलन या अहमदाबाद आंदोलन (1918 ई0) - सबसे पहले उन्होंने अहमदावाद के कपड़ा मिलों में काम करने वाले मजदूरों की बेहतर स्थिति की मांग की

खेड़ा आंदोलन या किसान आंदोलन (1918 ई0) - खेड़ा में फसल चौपट होने पर राज्य से किसानों का लगान माफ करने की मांग की।

चंपारण, अहमदाबाद और खेड़ा में की गई पहल से गांधीजी एक ऐसे राष्ट्रवादी के रूप में उभरे जिनमें गरीबों के लिए गहरी सहानुभूति थी

© JCERT not to be republished

राष्ट्रवादी नेता के रूप में गांधी जी के आंदोलन

असहयोग आंदोलन (1920-22)

अध्यक्ष- महात्मा गाँधी

असहयोग आंदोलन के कारण

A. रौलेट एक्ट(1919)

अध्यक्ष - सर सिडनी रौलेट,

इस एक्ट के तहत भारतीय प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

बिना जांच के कारावास की अनुमति दे दी गई थी।

गांधी जी ने इसके खिलाफ अभियान चलाया।

B. जालियांवाला बाग हत्याकांड(1919)

रोलेट एक्ट के विरोध में अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को जालियांवाला बाग में एक राष्ट्रवादी सभा का आयोजन किया गया था।

इस शांति पूर्ण सभा पर एक अंग्रेज ब्रिगेडियर द्वारा गोली चलाने का आदेश दे दिया गया।

इस हत्या कांड में 400 लोग मारे गए।

गाँधी जी व कॉंग्रेस ने इसकी जाँच की माँग की।

रौलेट सत्याग्रह से ही गाँधी जी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता बन गए।

ये दोनों कारणों से क्षुब्ध होकर महात्मा गाँधी ने अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ असहयोग आंदोलन की मांग कर दी।

अपने संघर्ष का और विस्तार करते हुए गाँधी जी ने खिलाफत आंदोलन को असहयोग आंदोलन के साथ मिला लिया

खिलाफ़त आंदोलन (1919-20)

नेतृत्व कर्ता - मोहम्मद अली और शौकत अली

भारतीय मुसलमानों का आंदोलन।

© JCERT not to be republished

आंदोलन की मांगे:

पहले के ऑटोमन साम्राज्य के सभी इस्लामी पवित्र स्थलों पर तुर्की खलीफा का नियंत्रण बना रहे।

जाजीरात- उल- अरब(अरब, सीरिया, इराक़, फिलिस्तीन) इस्लामी संप्रभुता के अधीन रहे।

खलीफा के पास इतने क्षेत्र हो कि वह इस्लामी विश्वास को सुरक्षित करने के योग्य बन सके।

गाँधी जी ने इसे असहयोग आंदोलन के साथ मिलाने की कोशिश की।

अखिल भारतीय खिलाफ़त कमेटी (दिल्ली 24 nov 1919)की अध्यक्षता भी महात्मा गाँधी ने की।

© JCERT not to be republished

असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम

विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूलों और कॉलेजों मे जाना छोड़ दिया।

वकीलों ने अदालत जाने से मना कर दिया।

श्रमिक वर्ग हड़ताल पर चले गये।

1921 में 396 हड़तालें हुई जिनमें 6 लाख श्रमिक शामिल थें। इससे 70 लाख कार्यदिवसों का नुकसान हुआ।

आंध्र प्रदेश के जनजातियों ने वन्य कानून का उल्लंघन किया।

अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाया।

असहयोग आंदोलन के परिणाम

1857 के विद्रोह के बाद पहली बार असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप अँग्रेजी राज की नींव हिल गई।

भारतीय हिन्दू मुस्लिम एकता कायम हुई।

असहयोग आंदोलन का अंत

फरवरी 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रांत के चौरी चौरा पुरवा में पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी। इस अग्निकांड में कई पुलिसवालों की जान चली गई। हिंसा की इस कार्यवाही से गांधी जी को यह आंदोलन तत्काल वापस लेना पड़ा।

असहयोग आंदोलन के दौरान हजारों भारतीयों को जेल में डाल दिया गया।

स्वयं गांधीजी को मार्च 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया इन्हें 6 वर्षों की जेल की सजा सुनाई गई।

जज, ब्रूमफील्ड ने कहा कि आपके सजा में कमी और मुक्त करना संभव हुआ तो मुझसे ज्यादा कोई खुश नहीं होगा।

महात्मा गांधी के अमेरिकी जीवनी लेखक लुई फिशर ने लिखा है कि असहयोग भारत और गांधीजी के जीवन के एक युग का ही नाम हो गया। यह स्वशासन के लिए एक प्रशिक्षण था।

© JCERT not to be republished

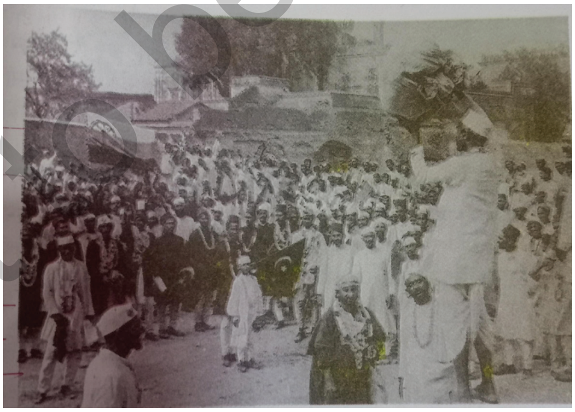

असहयोग आंदोलन, 1922
विदेशी वस्त्रों को इकट्ठा किया जा रहा है ताकि उन्हें आग में जलाया जा सके।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

ज़न नेता

गाँधी जी के समाज सुधार कार्य

- महात्मा गांधी फरवरी 1924 में जेल से रिहा हो गए अब उन्होंने अपना ध्यान समाज सुधार कार्यों में लगाया
- खादी को बढ़ावा देकर लोगों को स्वावलंबी बनाना सिखाया
- बाल विवाह और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों से मुक्त होने पर बल दिया
- हिंदू मुस्लिम के बीच सौहार्द पर बल दिया
- कई वर्षों बाद 1928 में गांधीजी का पुनः राजनीति में प्रवेश हुआ।

1928 ई0 में दो आंदोलनों को महात्मा गाँधी का समर्थन

साईमन कमीशन का आगमन

- 1928 में साइमन कमीशन जिसमें सभी अंग्रेज सदस्य थे को उपनिवेश की स्थितियों की जांच पड़ताल के लिए इंग्लैंड से भेजा गया था।
- इसके विरोध में अखिल भारतीय अभियान चलाया जा रहा था ।
- इस आंदोलन में गाँधी जी स्वयं भाग नहीं लिए थें पर उन्होनें इस आंदोलन को अपना आशीर्वाद प्रदान किया था।

बारदोली सत्याग्रह (1928)

- स्थान - गुजरात
- नेतृत्वकर्ता - सरदार बल्लभ भाई पटेल
- इस आंदोलन को भी गांधी जी ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया था

© JCERT not to be republished

दाण्डी यात्रा, मार्च 1930

1929 का लाहौर कांग्रेस अधिवेशन

1929 में दिसंबर के अंत में कांग्रेस ने अपना वार्षिक अधिवेशन लाहौर में किया

यह अधिवेशन दो दृष्टि से महत्वपूर्ण था

पहला जवाहरलाल नेहरू के अध्यक्ष के रूप में चुनाव जो युवा पीढ़ी को नेतृत्व की छड़ी सौंपने का प्रतीक था।

दूसरा पूर्ण स्वराज की उद्घोषणा।

26 जनवरी 1930 को विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहरकर और देशभक्ति के गीत गाकर स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

नमक सत्याग्रह (1930 ई0)

1920- 22 की तरह इस बार भी गांधी जी के आह्वान ने तमाम भारतीय वर्गों को अपनी औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध अपना असंतोष व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया

विरोध के प्रतीक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश भारत के सर्वाधिक घृणित कानूनों मे से एक नमक कानून को चुना। जिसके उत्पादन और विक्रय पर राज्य का एकाधिकार था।

प्रत्येक भारतीय घर में नमक का प्रयोग अपरिहार्य था लेकिन इसके बावजूद उन्हें घरेलू प्रयोग के लिए भी नमक बनाने से रोका गया और इस तरह उन्हें दुकानों से ऊंचे दाम पर नमक खरीदने के लिए बाध्य किया गया

नमक पर राज्य का आधिपत्य बहुत अलोकप्रिय था।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

नमक सत्याग्रह के कार्यक्रम

दांडी यात्रा

नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य के एकाधिकार को तोड़ने के लिए एक यात्रा का नेतृत्व करेंगे

12 मार्च 1930 को गाँधी जी ने साबरमती आश्रम से अपने अनुयायियों के साथ समुद्रतट की ओर चलना शुरू किया।

तीन हफ्तों बाद वे 6 अप्रैल 1930 को समुद्रतट दांडी पहुंचे।

वहाँ उन्होंने मुट्ठी भर नमक बनाकर स्वयं को कानून की निगाहों में अपराधी बना दिया।

देश के अन्य भागों में भी समानांतर नमक यात्राएं आयोजित की गई।

वन कानूनों का उल्लंघन किया गया।

फैक्ट्री कामगार हड़ताल पर चले गये।

स्कूल एवं कॉलेजों का बहिष्कार किया गया।

ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार किया गया।

नमक सत्याग्रह के सिलसिले में 60000 लोगों की गिरफ्तारी हुई।

महात्मा गांधी को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

अमेरिकी पत्रिका टाइम गांधीजी की कद काठी का" तकुए जैसे शरीर" और "मकड़ी जैसे पेटू" कह कर मजाक उड़ाता था, नमक यात्रा पर अपनी गहरी शंका व्यक्त की थी।

नमक यात्रा की सफ़लता के बाद अमरीकी पत्रिका टाईम की सोंच बदल गई थी।

अब वे भी गाँधी जी को साधु और राजनेता कह कर संबोधित करने लगे थें।

नमक यात्रा तीन कारणों से काफी महत्वपूर्ण था :-

महात्मा गाँधी दुनिया की नजर में आए।

पहली राष्ट्रवादी गतिविधि जिसमें औरतों ने बढ़ - चढ़ कर हिस्सा लिया।

इस यात्रा के कारण ही अँग्रेजों को य़ह एहसास हुआ था कि अब उनका राज्य बहुत दिन नहीं टिक सकेगा और उन्हें भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना पड़ेगा।

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया

© JCERT not to be republished

गोलमेज सम्मेलन

भारत में संवैधानिक सुधारों पर चर्चा करने के लिए अंग्रेज सरकार द्वारा 1930-32 ई0के बीच तीन गोलमेज सम्मेलन लंदन में आयोजित किए गए।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन (nov 1930)

इस सम्मेलन में देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए इस कारण ग्रह बैठक निरर्थक साबित हुई।

गाँधी इरविन समझौता (5 मार्च 1931)

जनवरी 1931 में गांधी जी को जेल से रिहा किया गया।

5 मार्च 1931 को महात्मा गाँधी जी और तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच कई ऐतिहासिक समझौते हुए जिसे **गाँधी इरविन समझौता** के नाम से जाना जाता है।

समझौते की शर्तें

सविनय अवज्ञा को वापस लेना।

सारे कैदियों की रिहाई।

तटीय इलाकों में नमक उत्पादन की अनुमती देना शामिल था।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931 के आखिर में)

उसमें गांधी जी काँग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे।

गाँधीजी का कहना था कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है।

मुस्लिम लीग का कहना था कि वह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हित में काम करती है

राजे रजवाड़ों का दावा था कि कांग्रेस का उनके नियंत्रण वाले भूभाग पर कोई अधिकार नहीं है

बी. आर. अंबेडकर निचली जातियों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे

यह सम्मेलन किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा।

गाँधी जी को खाली हाथ लौटना पड़ा।

भारत लौटने पर उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से शुरू कर दी।

तीसरा गोलमेज सम्मेलन (nov 1932)

इसमें गाँधी जी भाग नहीं लिए।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

दूसरा गोल मेज सम्मेलन, लंदन, नवंबर 1931

स्टेफ़र्ड क्रिप्स के साथ महात्मा गाँधी, मार्च 1942

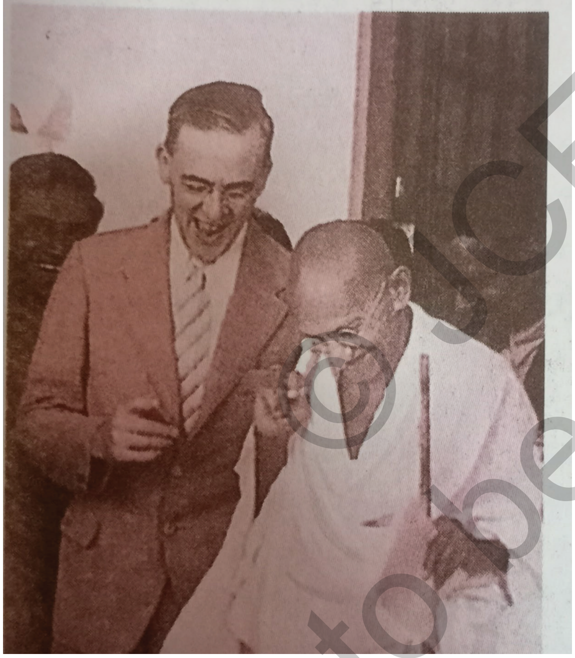

महात्मा गाँधी और राजेन्द्र प्रसाद वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो के साथ बैठक के लिए जाते हुए, 13 अक्टूबर 1939

इस बैठक में युद्ध में भारत की हिस्सेदारी के स्वरूप पर चर्चा की गई थी। जब वायसराय के साथ वार्ता टूट गई तो कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने इस्तीफ़ा दे दिया था।

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बम्बई में औरतों का एक जुलूस।

© JCERT not to be republished

गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट (1935)

- सीमित प्रतिनिधिक शासन व्यवस्था का आश्वासन व्यक्त किया गया।
- दो साल बाद 1937 में सीमित मताधिकार के आधार पर हुए चुनावों में कांग्रेस को ज़बर्दस्त सफलता मिली
- 11 में से 8 प्रांतों में कांग्रेस के प्रधानमंत्री सत्ता में आए जो ब्रिटिश गवर्नर की देखरेख में काम करते थे।

सितंबर 1939 में दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो गया

कांग्रेस मंत्रिमंडल का इस्तीफा (1939ई0)

- महात्मा गांधी ने फैसला लिया कि अगर अंग्रेज युद्ध समाप्त होने के बाद भारत को स्वतंत्रता देने पर राज़ी हो तो कांग्रेस उनके युद्ध प्रयासों में सहायता दे सकती है।
- सरकार ने उनका प्रस्ताव खारिज कर दिया।
- इसके विरोध में कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने अक्टूबर 1939 में इस्तीफा दे दिया।
- युद्ध समाप्त होने के बाद स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए शासकों पर दबाव डालने के वास्ते 1940- 1941 के दौरान कांग्रेस ने अलग-अलग सत्याग्रह कार्यक्रमों का आयोजन शुरू कर दिया
- मार्च 1940 में मुस्लिम लीग ने उपमहाद् वींप के मुस्लिम बहुल इलाकों के लिए कुछ स्वायत्तता की मांग का प्रस्ताव पेश किया
- अब राजनीतिक भूदृश्य काफी जटिल हो गया।
- अब यह संघर्ष कांग्रेस, मुस्लिम लीग और ब्रिटिश शासन तीन धुरियों के बीच का संघर्ष बन गया।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

क्रिप्स मिशन (1942ई0)

- 1942 के बसंत में प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने गांधी जी और काँग्रेस के साथ वार्ता के लिए अपने एक मंत्री सर स्टैनफोर्ड क्रिप्स को भारत भेजा।
- क्रिप्स के साथ वार्ता में कांग्रेस ने इस बात पर जोर दिया कि अगर धुरी शक्तियों से भारत की रक्षा के लिए ब्रिटिश शासन कांग्रेस का समर्थन चाहता है तो वायसराय अपने कार्यकारी परिषद में किसी भारतीय को एक रक्षा सदस्य के रूप में नियुक्त करे। इसी बात पर वार्ता टूट गई।

भारत छोड़ो (1942 ई0)

- क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपना तीसरा बड़ा आंदोलन छेड़ने का फ़ैसला लिया।
- अगस्त 1942 में शुरू हुए इस आंदोलन को अंग्रेजों भारत छोड़ो का नाम दिया गया।
- इस आंदोलन को " अंग्रेजों भारत छोड़ो" का नाम दिया गया था
- गांधी जी को फौरन गिरफ्तार कर लिया गया था लेकिन देश भर के युवा कार्यकर्ता हड़ताल और तोड़फोड़ के कार्रवाई के जरिए आंदोलन चलाते रहे।
- कांग्रेस में जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी सदस्य भूमिगत प्रतिरोध गतिविधियों में सबसे ज्यादा सक्रिय थे
- पश्चिम में सतारा और पुर्व में मेदिनीपुर जैसे कई जिलों में स्वतंत्र सरकार की स्थापना कर दी गई थी।
- यह आंदोलन एक जन आंदोलन था। इसमें लाखों आम हिंदुस्तानी शामिल थे। इस आंदोलन ने युवाओं को बड़ी संख्या में अपनी और आकर्षित किया।
- अंग्रेजों ने आंदोलन के प्रति काफी सख्त रवैया अपनाया
- इस विद्रोह को दबाने में सरकार को साल भर से ज्यादा समय लग गया।
- 1944 में गांधी जी को जेल से रिहा कर दिया गया।

© JCERT not to be republished

एक दंगाग्रस्त गाँव में जाते हुए महात्मा गाँधी, 1947

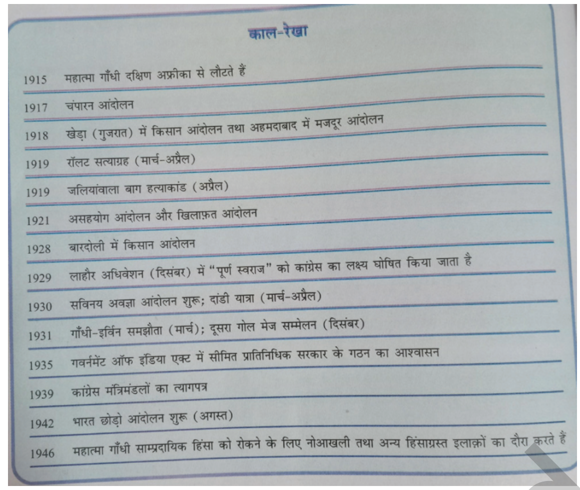

काल-रेखा

1915	महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका से लौटते हैं
1917	चंपारन आंदोलन
1918	खेड़ा (गुजरात) में किसान आंदोलन तथा अहमदाबाद में मजदूर आंदोलन
1919	रॉलट सत्याग्रह (मार्च-अप्रैल)
1919	जलियांवाला बाग हत्याकांड (अप्रैल)
1921	असहयोग आंदोलन और खिलाफ़त आंदोलन
1928	बारदोली में किसान आंदोलन
1929	लाहौर अधिवेशन (दिसंबर) में "पूर्ण स्वराज" को कांग्रेस का लक्ष्य घोषित किया जाता है
1930	सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू; दांडी यात्रा (मार्च-अप्रैल)
1931	गाँधी-इर्विन समझौता (मार्च); दूसरा गोल मेज सम्मेलन (दिसंबर)
1935	गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट में सीमित प्रातिनिधिक सरकार के गठन का आश्वासन
1939	कांग्रेस मंत्रिमंडलों का त्यागपत्र
1942	भारत छोड़ो आंदोलन शुरू (अगस्त)
1946	महात्मा गाँधी साम्प्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए नोआखली तथा अन्य हिंसाग्रस्त इलाक़ों का दौरा करते हैं

ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सरकार (1945)

1945 में ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सरकार बनी यह सरकार भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में थी।

वायसराय लॉर्ड वेवेल ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के बीच कई बैठकों का आयोजन किया।

प्रान्तीय विधान मंडल के चुनाव (1946 ई0)

1946 की शुरुआत में प्रांतीय विधान मंडलों के लिए नए सिरे से चुनाव कराए गए।

सामान्य श्रेणी में कांग्रेस को भारी सफलता मिली।

मुस्लिम लीग को अपने आरक्षित सीटों पर भारी बहुमत प्राप्त हुआ।

राजनीतिक ध्रुवीकरण पूरा हो चुका था।

© JCERT not to be republished

कैबिनेट मिशन (1946 ई0)

1946 के गर्मियों में कैबिनेट मिशन भारत आया।

इस मिशन ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग को एक ऐसी संघीय व्यवस्था पर राजी करने का प्रयास किया जिसमें भारत के भीतर विभिन्न प्रांतों को सीमित स्वायत्तता दी जा सकती थी।

कैबिनेट मिशन का यह प्रयास भी विफल रहा।

प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (1946 ई0)

कैबिनेट मिशन के असफल हो जाने पर जिन्ना ने पाकिस्तान की स्थापना के लिए लीग की मांग के समर्थन में एक 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' का आह्वान किया।

इसके लिए 16 अगस्त 1946 का दिन तय किया गया था।

उसी दिन कलकत्ता में खूनी संघर्ष शुरू हो गया।

यह हिंसा कलकत्ता से शुरू होकर ग्रामीण बंगाल बिहार और संयुक्त प्रांत व पंजाब तक फैल गई।

कुछ स्थान पर मुसलमानो को तो कुछ स्थान पर हिन्दुओं को निशाना बनाया गया।

भारत की स्वतंत्रता (1947 ई0)

फरवरी 1947 में वेवेल की जगह लॉर्ड माउंटबेटन को वायसराय नियुक्त किया गया।

उन्होंने वार्ताओं के एक अंतिम दौर का आह्वान किया। परंतु सुलह के लिए उनका यह प्रयास भी विफल हो गया तो उन्होंने ऐलान कर दिया कि ब्रिटिश भारत को स्वतंत्रता दे दी जाएगी लेकिन उसका विभाजन भी होगा।

औपचारिक सत्ता हस्तांतरण के लिए 15 अगस्त का दिन तय किया गया।

उस दिन भारत के विभिन्न भागों में लोगों ने जमकर खुशियां मनाई।

दिल्ली में जब संविधान सभा के अध्यक्ष ने महात्मा गाँधी को राष्ट्रपिता की उपाधि देते हुए संविधान सभा की बैठक शुरू की तो बहुत देर तक करताल ध्वनि होती रही।

असेम्बली के बाहर भीड़ महात्मा गांधी की जय के नारे लगा रही थी।

© JCERT not to be republished

आखिरी बहादुराना दिन

15 अगस्त 1947 को राजधानी में हो रहे उत्सव में महात्मा गांधी नहीं थे उस समय वह कलकत्ता मैं पीड़ितों को सांत्वना दे रहे थे।

वहाँ न तो वे किसी कार्यक्रम में हिस्सा लिया न ही झंडा फहराया। उस दिन 24 घंटे के उपवास पर थे।

उन्होंने इतने दिन तक जिस स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया था वह अकल्पनीय था। उनका राष्ट्र विभाजित था।

हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे की गर्दन पर सवार थे।

वे सभी से भाइचारे का हाथ बढ़ाने तथा शांति से रहने का अपील कर रहे थें।

गाँधी जी एवं काँग्रेस ने दो राष्ट्र सिद्धांत को कभी स् वींकार नहीं किया था।

गाँधी जी एवं नेहरू जी के आग्रह पर काँग्रेस ने अल्पसंख्यकों के अधिकारों का एक प्रस्ताव पारित कर दिया।

इसमें कहा गया कि भारत एक लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र होगा जहां सभी नागरिकों को पूर्ण अधिकार प्राप्त होंगे तथा धर्म के आधार पर भेदभाव के बिना सभी को राज्य की ओर से संरक्षण का अधिकार होगा।

कांग्रेस ने आश्वासन दिया कि वह अल्पसंख्यकों के नागरिक अधिकारों के किसी भी अतिक्रमण के विरुद्ध हर मुमकिन रक्षा करेगी।

गाँधीजी ने स्वतंत्र और अखंड भारत के लिए जीवन भर युद्ध लड़ा फिर भी जब देश विभाजित हो गया तो उनकी यही इच्छा थी कि दोनों देश एक दूसरे के साथ सम्मान और दोस्ती के संबंध बनाए रखें।

बहुत सारे भारतीयों को उनका यह सहृदय आचरण पसंद नहीं था।

30 जनवरी की शाम को गांधी जी की दैनिक प्रार्थना सभा में नाथूराम गोडसे नामक एक ब्राह्मण युवक ने उनको गोली मारकर मौत की नींद सुला दिया।

वह पुणे का रहने वाला चरमपंथी हिंदुत्ववादी अखबार का संपादक था।

वह गाँधी जी को 'मुसलमानों का खुशामदी' कहकर उनकी निंदा करता था।

गांधी जी की मृत्यु से चारों ओर गहरे शोक की लहर दौड़ गई।

भारत भर के राजनीतिक फलक पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

जॉर्ज ऑरवेल तथा अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे विख्यात गैर भारतीयों ने भी उनकी मृत्यु पर हृदयस्पर्शी शब्दों में शोक संदेश भेजें।

अमेरिका के टाइम पत्रिका ने उनके बलिदान की तुलना अब्राहम लिंकन के बलिदान से की।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

गाँधी को समझना

गाँधीजी को समझने के लिए हमारे पास बहुत सारे स्रोत उपलब्ध है:-

1.भाषण और निजी लेखन

हरिजन.पत्रिका(महात्मा गांधी द्वारा लिखित)-

महात्मा गाँधी इस अखबार में उन पत्रों को प्रकाशित करते थे जो उन्हें लोगों से मिलते थे।

ए बंच आफ ओल्ड लेटर (जवाहरलाल नेहरू द्वारा संकलित)

नेहरू ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान महात्मा गाँधी को लिखे गए पत्रों का एक संकलन तैयार किया और उसे ए बंच ऑफ ओल्ड लेटरस(पुराने पत्रों का पुलिंदा) के नाम से प्रकाशित किया

आत्मकथाएं

आत्म कथाएं भी हमें उस अतीत का ब्यौरा देती है जो माननीय विवरणों के हिसाब से काफी समृद्ध होता है

सरकारी रिकॉर्डस

यह दस्तावेज अभिलेखागारों में उपलब्ध हैं जिन्हें कोई भी देख सकता है।

अखबारों से

भारतीय भाषाओं में छपने वाले समकालीन अखबार भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है जो महात्मा गांधी की गतिविधियों पर नजर रखते थे, उनके बारे में खबरें छापते थे।

© JCERT not to be republished

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस कब आए?

   a. 1912 b. 1913

   c. 1914 d. 1915

2. महात्मा गांधी ने कहां पर पहली बार सत्याग्रह का प्रयोग किया?

   a. भारत

   b. दक्षिण अफ्रीका

   C. इंग्लैंड

   d. इनमें से कहीं नहीं

3. महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरु कौन थे?

   a. गोपाल कृष्ण गोखले

   b. एनी बेसेंट

   c. सुभाषचंद्र बोस

   d. मोहम्मद अली

4. चौरी चौरा की घटना कब हुई?

   a. 1921 b. 1922

   C. 1923 d. 1924

5. निम्नलिखित में से असहयोग आंदोलन से कौन सा संबंधित है?

   a. स्कूल न जाना

   b. न्यायालय न जाना

   c. कर न चुकाना

   d. इनमें से सभी

6. गोलमेज सम्मेलन का आयोजन कहां हुआ था?

   a. दिल्लीमें b. लंदन में

   c. अफ्रीका में d. साबरमती मे

7. किस गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गांधी ने भाग लिया था?

   a. प्रथम गोलमेज सम्मेलन

   b. दुसरा गोलमेज सम्मेलन

   c. तीसरा गोलमेज सम्मेलन

   d. इनमें से कोई नहीं

8. अंग्रेजों भारत छोड़ो किस आंदोलन का नाम था?

   a. खिलाफत आंदोलन

   b. असहयोग आंदोलन

   c. सविनय अवज्ञा आंदोलन

   d. भारत छोड़ो आंदोलन

9. महात्मा गांधी भारत में अपनी सत्याग्रह का प्रयोग पहली बार कहां किए?

   a. खेड़ा b. साबरमती

   c. चंपारण d. अहमदाबाद

10 ब्रिटिश भारत को स्वतंत्रता और बंटवारे का ऐलान किस वायसराय ने किया?

   a. माउंटबेटन

   b. लॉर्ड वेवल

   c. लॉर्ड इरविन

   d. इनमें से कोई नहीं

उत्तर :- 1. d, 2. b, 3. a, 4. b, 5. d, 6. b, 7. b, 8 d, 9. c, 10. a.

© JCERT not to be republished

अति लघुउतारिय प्रश्न

महात्मा गांधी का पूरा नाम क्या है?

गांधीजीदक्षिण अफ्रीका से कब लौटे?

असहयोग आंदोलन का प्रारंभ किसने किया था?

गांधीजी का दांडी मार्च किस आंदोलन से संबंधित है?

महात्मा गांधी ने भारत में सत्याग्रह सबसे पहले कहां प्रयोग किया था?

लघु उत्तरीय प्रश्न

चंपारण सत्याग्रह पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें?

असहयोग आंदोलन के क्या कारण थे?

गांधीजी को जानने की कौन-कौन से स्रोत है?

सविनय अवज्ञा आंदोलन से आप क्या समझते हैं?

चौराचौरी घटना पर टिप्पणी लिखें?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी का क्या योगदान है?

नमक कानून स्वतंत्रता संघर्ष का महत्वपूर्ण मुद्दा क्यों बना?

गोलमेज सम्मलेन का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर दीजिए (लगभग 00 से 50 शब्दों में)

प्रश्न 1: महात्मा गाँधी ने स्वयं को सामान्य लोगों जैसा दिखाने के लिए क्या किया?

उत्तर: महात्मा गाँधी ने स्वयं को सामान्य लोगों जैसा दिखाने के लिए अनेक कदम उठाए। गाँधी ने भारतीय जनता की दशा को सुधारने के लिए लगभग एक वर्ष तक देश के विभिन्न भागों को भ्रमण किया। गाँधी जी की प्रथम महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक उपस्थिति फरवरी 1916 ई० में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में हुई। गाँधी जी ने समारोह में उपस्थित भद्रजनों एवं अनुपस्थित लाखों गरीबों के मध्य दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई आर्थिक विषमता के प्रति चिंता व्यक्त की।

समारोह में बोलते हुए गाँधी जी ने कहा, "हमारी मुक्ति केवल किसानों के माध्यम से ही हो सकती है। न तो वकील, न डॉक्टर और न ही जमींदार इसे सुरक्षित रख सकते हैं।" इस प्रकार गाँधी जी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वे भारतीय

राष्ट्रवाद के विकास में संपूर्ण भारतीय जनता को साथ लेकर चलना चाहते थे। 1922 ई० तक गाँधी जी जन नेता बन चुके थे। सामान्यजन गाँधी जी के प्रशंसक थे और उन्हें सम्मानपूर्वक महात्मा जी' कहते थे। गाँधी जी अन्य नेताओं के समान न तो सामान्य जनसमूह से अलग रहते थे और न ही उनसे अलग दिखते थे।

गाँधी जी सामान्य लोगों की ही भाषा बोलते थे और उनकी ही तरह के वस्त्र पहनते थे। सामान्यजनों के साथ गाँधी जी की पहचान उनके वस्त्रों से विशेष रूप से झलकती थी। उल्लेखनीय है कि अन्य राष्ट्रवादी नेता पाश्चात्य शैली के सूट अथवा भारतीय बन्दगला जैसे औपचारिक वस्त्रों को धारण करते थे। किन्तु गाँधी जी की वेशभूषा अत्यधिक सीधी -सादी थी। वे जनसामान्य के मध्य में एक साधारण-सी धोती में जाते थे।

1921 ई० में दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान गाँधी जी ने अपना सिर मेंडवा लिया था और गरीबों के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए वे सूती वस्त्र पहनने लगे थे। वे प्रतिदिन कुछ समय चरखा चलाने में व्यतीत करते थे। उल्लेखनीय है कि पारम्परिक भारतीय समाज में ऊँची जातियाँ सूतकताई के कार्य को अच्छा नहीं समझती थीं। जनसामान्य के प्रति गाँधी जी का

© JCERT not to be republished

दृष्टिकोण अत्यधिक सहानुभूतिपूर्ण था। उनकी सीधी-सादी जीवनशैली एवं हाथों से काम करने के प्रति उनका लगाव उन्हें जनसामान्य के बहुत निकट ले आया था।

प्रश्न 2. किसान महात्मा गाँधी को किस तरह देखते थे?

उत्तर: किसान गाँधी जी को अपना मसीहा एवं अनेक लोकोपकारी और चमत्कारिक शक्तियों से संपन्न समझते थे। गाँधी जी की चमत्कारिक शक्तियों के विषय में स्थान-स्थान पर अनेक प्रकार की अफ़वाहों का प्रसार हो रहा था। कुछ स्थानों पर जनसामान्य का यह विश्वास बन गया था कि राजा ने उन्हें किसानों के कष्टों को दूर करने तथा उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए भेजा है और उनके पास इतनी शक्ति थी कि वे सभी अधिकारियों के निर्देशों को अस्वीकृत कर सकते थे। कुछ अन्य स्थानों पर गाँधी जी कीं शक्ति को अंग्रेज बादशाह से भी अधिक बताया गया और यह दावा किया गया कि उनके आगमन से औपनिवेशिक शासक भयभीत होकर स्वत: हीं भाग जाएँगें।

इस प्रकार की अफवाहें भी जोर पकड़ने लगीं कि किसी में भी गाँधी जी का विरोध करने की शक्ति नहीं थी और उनका विरोध करने वालों को भयंकर परिणाम भुगतने पड़ते थे। अनेक ग्रामों में यह अफ़वाह थी कि गाँधी जी की आलोचना करने वाले लोगों के घर रहस्यात्मक ढंग से गिर गए थे अथवा खेतों में खड़ी उनकी हरी-भरी फसल बिना किसी कारण के ही नष्ट हो गई थी। भारतीय जनसंख्या के एक विशाल भाग का निर्माण करने वाले किसान गाँधी जी की सात्विक जीवन-शैली तथा उनके द्वारा ग्रहण किए गए धोती और चरखा जैसे प्रतीकों से अत्यधिक प्रभावित थे। किसानों में गाँधी जी 'गाँधी बाबा, 'गाँधी महाराज' अथवा 'महात्मा जैसे अनेक नामों से प्रसिद्ध थे। वें उन्हें अपना उद्धारक मानते थे और उनका विश्वास था कि गाँधी जी ही उन्हें भू: राजस्व की कठोर दरों तथा ब्रिटिश अधिकारियों की दमनात्मक गतिविधियों से बचा सकते हैं, वे उनकी मान-मर्यादा के रक्षक हैं तथा उनकी स्वायत्तता उन्हें वापस दिलवा सकते हैं।

प्रश्न 3. नमक कानून स्वतंत्रता संघर्ष का महत्त्वपूर्ण मुद्दा क्यों बन गया था?

उत्तर: नमक एक बहुमूल्य राष्ट्रीय संपदा थी जिस पर औपनिवेशिक सरकार ने अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया था। गाँधी जी की दृष्टि में यह एकाधिकार एक प्रकार से चौतरफा अभिशाप था। यह जनसामान्य को एक महत्त्वपूर्ण सुलभ ग्राम-उद्योग से ही वंचित नहीं कराता था अपितु प्रकृति द्वारा बहुतायत में उत्पादित संपदा का भी विनाश करता था। इसलिए गाँधी जी ने औपनिवेशिक शासन के विरोध के लिए नमक का प्रतीक रूप में चुनाव किया और शीघ्र ही नमक कानून स्वतंत्रता संघर्ष का एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बन गया।

इसके प्रमुख कारण इस प्रकार थे:

1. नमक कानून ब्रिटिश 'भारत के सर्वाधिक घृणित कानूनों में से एक था। इसके अनुसार नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य का एकाधिकार स्थापित था।
2. जनसामान्य नमक कानून को घृणा की दृष्टि से देखता था। प्रत्येक घर में नमक भोजन का एक अपरिहार्य अंग था। किन्तु भारतीयों द्वारा घरेलू प्रयोग के लिए भी स्वयं नमक बनाए जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। नमक कानून के कारण भारतीयों को विवशतापूर्वक दुकानों से ऊँचे मूल्यों पर नमक खरीदना पड़ता था।
3. नमक पर राज्य का एकाधिकार अत्यधिक अलोकप्रिय था। जनसामान्य में इस कानून के प्रति असंतोष व्याप्त था।
4. नमक उत्पादन पर सरकार के एकाधिकार ने लोगों को एक महत्त्वपूर्ण किन्तु सरलतापूर्वक उपलब्ध ग्राम-उद्योग से वंचित कर दिया था।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 4. राष्ट्रीय आंदोलन के अध्ययन के लिए अख़बार महत्त्वपूर्ण स्रोत क्यों है?

उत्तर: राष्ट्रीय आंदोलन के अध्ययन के स्रोतों में अख़बारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनसे हमें राष्ट्रीय आंदोलन के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण सहायता मिलती है।

1. अंग्रेजी एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं में छपने वाले समकालीन समाचार-पत्रों में राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित सभी । घटनाओं का विवरण मिलता है।
2. समाचार-पत्रों से राट्रीय आंदोलन के नेताओं के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है।
3. समाचार-पत्रों से राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति ब्रिटिश सरकार के दृष्टिकोण का पता लगता है।
4. समाचार-पत्रों द्वारा महात्मा गाँधी की गतिविधियों पर नजर रखी जाती थी क्योंकि गाँधी जी से संबंधित समाचारों को विस्तृत रूप से प्रकाशित किया जाता था। अत: समाचार-पत्रों से विशेष रूप से महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन के विषय में महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं।
5. समाचार-पत्रों से यह भी पता लगता है कि जनसामान्य की राष्ट्रीय आंदोलन तथा गाँधी जी के विषय में क्या धारणा थी।
6. समाचार-पत्रों से राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित महत्त्वपूर्ण घटनाओं एवं नेताओं के विषय में पक्ष और विपक्ष दोनों के विचार मिलते हैं।

अत: इनकी सहायता से राष्ट्रीय आंदोलन के निष्पक्ष अध्ययन में महत्त्वपूर्ण सहायता मिलती है। किन्तु यह याद रखा जाना चाहिए कि समाचार-पत्रों में प्रकाशित विवरण अनेक पूर्वाग्रहों से युक्त थे। समाचार-पत्र प्रकाशित करनेवालों की अपनी राजनैतिक विचारधाराएँ थीं और विश्व के प्रति उनका अपना दृष्टिकोण था। उनके विचारों के आधार पर ही विभिन्न विषयों को प्रकाशित किया जाता था तथा घटनाओं की रिपोर्टिंग की जाती थी। इसलिए लंदन से प्रकाशित होनेवाले समाचार-पत्रों के विवरण भारतीय राष्ट्रवादी समाचार-पत्रों में छपनेवाले विवरणों के समान नहीं हो सकतें थे।

प्रश्न 5. चरखे को राष्ट्रवाद का प्रतीक क्यों चुना गया?

उत्तर: गाँधी जी चरखे को एक आदर्श समाज के प्रतीक के रूप में देखते थे। वे प्रतिदिन अपना कुछ समय चरखा चलाने में व्यतीत करते थे। उनका विचार था कि चरखा गरीबों को पूरक आमदनी प्रदान करके उन्हें आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बना सकता है। उन्होंने 3 नवम्बर, 1924 ई० को 'यंग इंडिया में लिखा था-मेरी आपत्ति मशीन के प्रति सनक से है। यह सनक श्रम बचाने वालीं मशीनरी के लिए है। ये तब तक "श्रम बचाते रहेंगे, जब तक कि हज़ारों लोग बिना काम के और भूख से मरने के लिए सड़कों पर न फेंक दिए जाएँ। मैं मानव

समुदाय के किसी एक हिस्से के लिए नहीं अपितु सभी के लिए समय और श्रम बचना चाहता हूँ, मैं धन का केन्द्रीकरण कुछ ही लोगों के हाथों में नहीं अपितु सभी के हाथों में करना चाहता हूँ।' गाँधी जी ने 17 मार्च, 1927 ई० को 'यंग इंडिया में लिखा था-खद्दर मशीनरी को नष्ट नहीं करना चाहता अपितु यह इसके प्रयोग को नियमित करता है और इसके विकास को नियन्त्रित करता है। यह मशीनरी का प्रयोग सर्वाधिक गरीब लोगों के लिए उनकी अपनी झोंपड़ियों में करता है। पहिया अपने-आप में ही मशीनरी का एक उत्कृष्ट नमूना है।' वास्तव में, चरखे के साथ गाँधी जी भारतीय राष्ट्रवाद की सर्वाधिक स्थायी पहचान बन गए थे। वे अन्य राष्ट्रवादियों को भी चरखा चलाने के लिए प्रोत्साहित करते थे। चरखा जनसामान्य से संबंधित था और आर्थिक प्रगति का प्रतीक था, इसलिए इसे राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में चुना गया।

© JCERT not to be republished

निम्नलिखित पर एक लघु निबंध लिखिए (लगभग 250 से 300 शब्दों में) प्रश्न है। असहयोग आंदोलन एक तरह का प्रतिरोध कैसे था?

उत्तर: असहयोग आंदोलन एक तरह का प्रतिरोध निम्नलिखित कारणों से था

1. असहयोग आंदोलन एक तरह का प्रतिरोध इसलिए था क्योंकि ब्रिटिश सरकार द्वारा थोपे गए रॉलेट एक्ट जैसे कानून के वापस लिए जाने के लिए जनआक्रोश या प्रतिरोध अभिव्यक्ति का लोकप्रिय माध्यम था।

2. असहयोग आंदोलन इसलिए भी प्रतिरोध आंदोलन था, क्योंकि राष्ट्रीय नेता उन अंग्रेज़ अधिकारियों को कठोर दंड दिलाना चाहते थे जो अमृतसर के जालियाँवाला बाग में शांतिपूर्ण प्रदर्शन में शामिल प्रदर्शनकारियों पर होने वाले अत्याचार के उत्तरदायी थे। उन्हें सरकार ने कई महीनों के बाद भी किसी प्रकार का दंड नहीं दिया था।

3. असहयोग आंदोलन इसलिए भी प्रतिरोध था, क्योंकि यह ख़िलाफत आंदोलन को सहयोग करके देश के दो प्रमुख धार्मिक समुदायों-हिंदू और मुसलमानों को मिलाकर औपनिवेशिक शासन के प्रति जनता के असहयोग को अभिव्यक्त करने का माध्यम था।

4. असहयोग आंदोलन इसलिए भी प्रतिरोध था, क्योंकि इसके द्वारा सरकारी नौकरियों, उपाधियों अवैतनिक पदों, सरकारी अदालतों, सरकारी संस्थाओं आदि का बहिष्कार किया जाना था। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके, सरकार द्वारा आयोजित चुनावों में 'भाग न लेकर, सरकारी करों का 'भुगतान न करके तथा सरकारी कानूनों की

   शांतिपूर्ण ढंग से अवहेलना करके ब्रिटिश शासन के प्रति अपना प्रतिरोध प्रकट करना चाहते थे।

5. असहयोग आंदोलन ने सरकारी अदालतों का बहिष्कार करने के लिए सर्व साधारण और वकीलों को आह्वान किया। गाँधी जी के इस आह्वान पर वकीलों ने अदालतों में जाने से मना कर दिवा।

6. इस व्यापक लोकप्रिय प्रतिरोध का प्रभाव अनेक कस्बों और नगरों में कार्यरत श्रमिक वर्ग पर भी पड़ा। वे हड़ताल पर चले गए। जानकारों के अनुसार सन् 1921 में 396 हड़ताले हुई जिनमें 6 लाख श्रमिक शामिल थे और इससे 30 लाख कार्य-दिवसों की हानि हुई।

7. असहयोंग आंदोलन का प्रतिरोध देश के ग्रामीणों क्षेत्र में भी दिखाई दे रहा था। उदाहरण के लिए, उत्तरी आंध्र की। पहाड़ी जन-जातियों ने वन्य कानूनों की अवहेलना कर दी। अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाया। कुमाऊँ के । किसानों ने औपनिवेशिक अधिकारियों का सामान ढोने से साफ मना कर दिया। इन आंदोलनों को कभी-कभी स्थानीय राष्ट्रवादी नेतृत्व की अवज्ञा करते हुए भी कार्यान्वित किया गया। इस प्रकार यह कहना उचित ही होगा कि असहयोग आंदोलन का प्रमुख उद्देश्य औपनिवेशिक शासन का प्रतिरोध करना था।

प्रश्न 7. गोलमेज सम्मेलन में हुई वार्ता से कोई नतीजा क्यों नहीं निकल पाया?

उत्तर: इतिहास के रिकॉर्ड के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने 1930 से लेकर 1937 तक गोलमेज सम्मेलनों का आयोजन किया था। पहली गोलमेज वार्ता लंदन में नवंबर, 1930 में आयोजित की गई थी जिसमें देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। इस कारण अंततः यह बैठक निरर्धक साबित हुई। इस गोलमेज की विफ़लता पर भारतीय इतिहास के विख्यात विद्वान लेखक प्रोफेसर विपिन चंद्र कहते हैं कि-'गाँधी जी लोगों के हृदय पर भगवान राम की तरह उस समय राज करते थे। जब राम ही लंदन में होने वाली सभा में नहीं पहुँचे तो रामलीला कैसे हो सकती थी।" सरकार

© NCERT not to be republished

भी जानती थी कि बिना प्रमुख नेताओं के लंदन में गोलमेज़ बुलाना निरर्थक होगा। अत: सरकार ने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की तैयारी शुरू की। वायसराय लार्ड इर्विन ने जनवरी, 1931 में ही महात्मा गाँधी को जैल से रिहा कर दिया।

अगलें ही महीने वायसराय डर्विन के साथ गाँधी जी की कई लंबी बैठकें हुई। इन्हीं बैठकों के बाद गाँधी-इर्विन समझौते पर सहमति बनी जिसकी शर्तों में सविनय अवज्ञा आंदोलन को चापस लेना, सारे कैदियों की रिहाई और तटीय क्षेत्रों में नमक उत्पादन की अनुमति देना आदि शर्ते शामिल थीं। रैडिकल राष्ट्रवादियों ने इस समझौते को द्वितीय गोलमेज की तैयारी के लिए सहीं वातावरण तैयार करने वाला नहीं मानकर गाँधी जी की भी कट आलोचना की। क्योंकि ब्रिटिश सरकार से भारतीयों के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता का आश्वासन हासिल करने में गाँधी जी विफल रहे थे। यहाँ हमें याद रखना चाहिए कि लाहौर में रावी नदी के किनारे पर हुए वार्षिक अधिवेशन (1929) में कांग्रेस और राष्ट्रवादियों ने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने का लक्ष्य घोषित कर दिया था।

गाँधी जी को इस संभावित और घोषित लक्ष्य प्राप्ति के लिए वार्ताओं का आश्वासन मिला था। वस्तुत: भारतीय राष्ट्रवादी जहाज से बंबई उतरे तो उन्होंने कहा कि मैं खाली हाथ लौट आया हूँ और सरकार के अड़ियल रवैये के बाद हमें दुबारा से सचविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करना पड़ेगा और उन्होंने ऐसा ही किया।

भारत में नए वायसारय लार्ड विलिंग्डॉन को गाँधी जी से बिलकुल हमदर्दी नहीं थी। उसने एक निजी पत्र में स्पष्ट रूप से इस बात की पुष्टि की थी। विलिंग्डॉन ने लिखा था कि अगर गाँधी न होता तो यह दुनिया वाकई बहुत खूबसूरत होती। वह जो भी कदम उठाता है, उसे ईश्वर की प्रेरणा का परिणाम कहता है, लेकिन असल में उसके पीछे एक गहरी

राजनीतिक चाल होती है। देखता हूँ कि अमेरिकी प्रेस उसको गजब का आदमी बताती है। लेकिन सच यह है कि हम निहायत अव्यावहारिक, रहस्यवादी और अंधविश्वासी जनता के बीच रह रहे हैं जो गाँधी को भगवान मान बैठी है...” इसी के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन तीसरे और अंतिम चरण में अगस्त, 1933 से 9 महीने तक चलता रहा।

गाँधी जी सहित अनेक प्रमुख नेता बंदी बना लिए गए। 1934 में निरुत्साहित जनता को देखकर गाँधी जी ने इस आंदोलन को बंद कर दिया। भारत में जिन दिनों गाँधी जी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया जा रहा था, ब्रिटिश सरकार ने लंदन में तीसरी गोलमेंज कांफ्रेंस बुलाई। इंग्लैण्ड की लेबर पार्टी ने इसमें ‘भाग नहीं लिया। कांग्रेस पार्टी ने भी इस कांफ्रेंस का बहिष्कार किया। क़ुछ भारतीय प्रतिनिधि, आंदोलन को जारी हुए लगभग 46 वर्ष (1885-1931) हो चुके थे। अब लोंग पूर्ण स्वतंत्रता का वायदा विदेशी सरकार से चाहते थे। जों भी हों, दूसरा गोलमेज सम्मेलन 1931 के आखिर में ब्रिटेन की राजधानी लंदन में आयोजित हुआ। उसमें महात्मा गाँधी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से प्रतिनिधित्व और नेतृत्व कर रहे थे। गाँधी जी का कहना था कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है। इस दावे को तीन पार्टियों ने खुली चुनौती दे दी।

1. मुस्लिम लीग को इस संदर्भ में कहना था कि वह भारत के मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हित में काम करती है।
2. भारत के 556 रजवाड़ों का दावा था कि कांग्रेस का उनके नियंत्रण वाले भू-भाग पर कोई अधिकार नहीं है।
3. तीसरी चुनौती डॉ० भीमराव अंबेडकर की तरफ से थी, जो बहुत बड़े वकील और चिचारक थे।

उन्होंने कहा कि वह दलितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। महात्मा गाँधी और कांग्रेस पार्टी देश में तथाकथित दलित समझी और कहीं जाने ।

वाली नीची जातियों का प्रतिनिधित्व बिलकुल नहीं करते। परिणाम यह हुआ कि हर दल और नेता अपने-अपने पक्ष, विचार, तर्क और माँगें

© JCERT not to be republished

रखते रहे जिसका कुल मिलाकर नतीजा शून्य के रूप में सामने आया। गाँधी जी जैसे ही जहाज से बंबई उतरे तो उन्होंने कहा कि मैं खाली हाथ लौट आया हूँ और सरकार के अड़ियल रवैये के बाद हमें दुबारा से सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करना पड़ेगा और उन्होंने ऐसा ही किया।

भारत में नए वायसारय लार्ड विलिंडॉन को गाँधी जी से बिलकुल हमदर्दी नहीं थी। उसने एक निजी पत्र में स्पष्ट रूप से इस बात की पुष्टि की थी। विलिंग्ग्टॉन ने लिखा था कि अगर गाँधी न होता तो यह दुनिया वाकई बहुत खूबसूरत होती। वह जो भी कदम उठाता है, उसे ईश्वर की प्रेरणा का परिणाम कहता है, लेकिन असल में उसके पीछे एक गहरी राजनीतिक चाल होती है। देखता हूँ कि अमेरिकी प्रेस उसको गजब का आदमी बताती है। लेकिन सच यह है कि हम निहायत अव्यावहारिक, रहस्यवादी और अंधविश्वासी जनता के बीच रह रहे हैं जो गाँधी को भगवान मान बैठी है...” इसी के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन तीसरे और अंतिम चरण में अगस्त, 1933 से 9 महीने तक चलता रहा।

गाँधी जी सहित अनेक प्रमुख नेता बंदी बना लिए गए। 1934 में निरुत्साहित जनता को देखकर गाँधी जी ने इस आंदोलन को बंद कर दिया। भारत में जिन दिनों गाँधी जी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया जा रहा था, ब्रिटिश सरकार ने लंदन में तीसरी गोलमेज कांफ्रेंस बुलाई। इंग्लैण्ड की लेबर पार्टी ने इसमें भाग नहीं लिया। कांग्रेस पार्टी ने भी इस कांफ्रेंस का बहिष्कार किया। कुछ भारतीय प्रतिनिधि, जो सरकार की हाँ में हाँ मिलाने वाले थे, उन्होंने इस सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन में लिए गए निर्णयों कौ श्रेत-पत्र (White Paper) के रूप में प्रकाशित किया गया और फिर इसके आधार पर 1935 का गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट पास किया गया।

प्रश्न 8. महात्मा गाँधी ने राष्ट्रीय आंदोलन के स्वरूप को किस तरह बदल डाला?

उत्तर: 1919-1947 ई० के काल का भारतीय इतिहास में विशेष स्थान है। इसी काल में एक महान् विभूति महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह, असहयोग और सविनय अवज्ञा जैसे अस्त्र-शस्त्रों के साथ भारतीय रणनीति में प्रवेश किया और शीघ्र ही राष्ट्रीय आंदोलन के कर्णधार बन गए। 1991 से स्वतंत्रता प्राप्ति तक महात्मा गाँधी ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्रविंदु बने रहे। गाँधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप परिवर्तित हो गया और इसने जन संघर्ष का रूप धारण कर लिया। जनवरी, 1915 ई० में गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश लौट आए थे। दक्षिण अफ्रीका के संघर्ष ने गाँधी जी को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को नेतृत्व सँभालने के लिए तैयार कर दिया। दक्षिण अफ्रीका में प्राप्त की गई सफलता ओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि शांतिपूर्ण अवज्ञा और सत्याग्रह के द्वारा विरोधी पक्ष को आंदोलन की माँगें स्वीकार करने को बाध्य किया जा सकता है।

दक्षिण अफ्रीका में दीनहीन भारतीयों पर होने वाले अन्याय के विरुद्ध संघर्षशीलता ने गाँधी जी को विश्वास दिला दिया साम्राज्य की शक्ति का सामना मूक जनशक्ति द्वारा करना चाहते थे।

उनका विचार था कि केवल जमींदारों, डॉक्टरों अथवा वकीलों के प्रयत्नों से देश को स्वतंत्र नहीं कराया जा सकता। देश की स्वतंत्रता के लिए जनसामान्य को राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा में लाना नितांत आवश्यक था। वह महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्रदान करना चाहते थे और उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा में सम्मिलित करना चाहते थे। हिंदू-मुस्लिम एकता, छुआछूत विरोधी संघर्ष और देश की महिलाओं की सामाजिक स्थिति को सुधारना, गाँधी जी के तीन महत्त्वपूर्ण लक्ष्य थे। गाँधी जी ने सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा के सिद्धांत पर आधारित संघर्ष की अपनी नवीन विधि का प्रयोग करके राष्ट्रीय आंदोलन को जनसामान्य को आंदोलन बना दिया। 1977-18 ई० की अवधि में गाँधी जी ने चम्पारन और खेड़ा के सत्याग्रहों में भाग लिया तथा अहमदाबाद के मिल मजदूरों की माँगों के समर्थन में संघर्ष किया।

© JCERT not to be republished

अगस्त, 1920 ई० को। गाँधी जी ने औपनिवेशिक प्रशासन के विरुद्ध असहयोग आंदोलन प्रारंभ कर दिया। मार्च 1930 ई० को उन्होंने विरोध के प्रतीक के रूप में नमक का चुनाव करके सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ कर दिया और अगस्त 1942 ई० में भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ करके अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए विवश कर कि भारतीय जनता को देश की स्वतंत्रता जैसे महान् उद्देश्य के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध प्रबल संघर्ष छेड़ने और इस हेतु बलिदान देने के लिए तत्पर किया जा सकता है। दक्षिण अफ्रीका में प्राप्त की गई सफलता-ओं ने जनशक्ति के महत्त्व को स्पष्ट कर दिया। अत: भारत लौटने पर गाँधी जी ने देश की बहुसंख्यक कृषक जनता को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की ओर आकर्षित किया और उसे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा से जोड़ा। दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित सत्याग्रह नामक नवीन संघर्ष प्रणाली का विकास किया था। सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है-सच्चाई पर दृढ़तापूर्वक अड़े रहना। गाँधी जी का संपूर्ण जीवन-दर्शन सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित था।

वह अहिंसा को प्रेम का स्वरूप मानते थे। उनको विश्वास था कि अहिंसा में सभी समस्याओं के निराकरण की अद्भुत शक्ति विद्यामान है। गाँधी जी की दृष्टि में अहिंसा कायरता और दुर्बलता की नहीं अपितु वीरता, दृढ़ता और निडरता की प्रतीक है। केवल निडर, वीर और दृढ़प्रतिज्ञ व्यक्ति ही इसका भली-भाँति प्रयोग कर सकते हैं। गाँधी जी की कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। वह सिद्धांत की अपेक्षा व्यवहार पर अधिक बल देते थे और साधनों की पवित्रता और श्रेष्ठता में विश्वास करते थे। उनका विचार था कि अच्छे साध्य की प्राप्ति के लिए साधन भी श्रेष्ठ होने चाहिए। गाँधी जी का जनसामान्य की संघर्ष शक्ति में दढ विश्वास था। वे... दिया। गाँधी जी के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लेने से भारतीय राष्ट्रवाद का स्वरूप परिवर्तित होने लगा। हमें याद रखना चाहिए कि गाँधी जी के जन अनुरोध में किसी भी प्रकार का छल-कपट नहीं था। उनके कुशल संगठनात्मक गुणों ने भारतीय राष्ट्रवाद के आधार को और अधिक व्यापक बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। भारत के भिन्न-भिन्न भागों में कांग्रेस की नई शाखाओं को खोला गया। रजबाड़ों अर्थात् देशी राज्यों में राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन देने के लिए 'प्रजामंडलों की स्थापना की गई। गाँधी जी ने राष्ट्रवादी भावनाओं के प्रसार तथा राष्ट्रवादी संदेश के संचार के लिए शासकों की भाषा के स्थान पर मातृभाषा का चुनाव किया। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस की प्रांतीय समितियाँ ब्रिटिश भारत की कृत्रिम सीमाओं पर नहीं अपितु भाषायी क्षेत्रों के आधार पर स्थापित की गई थीं।

इन भिन्न-भिन्न उपायों ने देश के दूरवर्ती भागों में राट्रवाद के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इनके परिणामस्वरूप वे सामाजिक वर्ग भी राष्ट्रवाद का महत्त्वपूर्ण भाग बन गए, जो अभी तक इससे अछूते रहे थे। किसानों, श्रमिकों और कारीगरों ने हजारों की संख्या में राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेना प्रारंभ कर दिया। गाँधी जी के नेतृत्व में छेड़े गए असहयोग आंदोलन में छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष, हिंदू-मुसलमान, उदारपंथी, रूढ़िवादी सभी समान रूप से सम्मिलित हुए। इसी प्रकार सविनय अवज्ञा आंदोलन में जनसामान्य ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया। दिल्ली में लगभग 1600 महिलाओं ने शराब की दुकानों पर धरना दिया। इस प्रकार भारत छोड़ो आंदोलन वास्तविक अर्थों में एक जन आंदोलन बन गया।

इसमें सामान्य भारतीयों ने लाखों की संख्या में भाग लिया। सामान्य भारतीयों के साथ-साथ कुछ अत्यधिक संपन्न व्यापारी एवं उद्योगपति भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के समर्धक बन गए। वे यह बात भली भाँति समझ गए कि स्वतंत्र भारत में वे लाभ उनके हो जाएँगे, जो आज उनके अंग्रेज प्रतिद्वन्द्वियों की झोली में जा रहे थे। परिणामस्वरूप, जी०डीं० बिड़ला जैसे कुछ सुप्रसिद्ध उद्योगपति राष्ट्रीय आंदोलन का खुला समर्थन करने लगे, जबकि कुछ अन्य उद्योगपति इसके मूक समर्थक बन गए। इस प्रकार, कांग्रेस के अनुयायियों एवं प्रशंसकों में गरीब किसान और उद्योगपति दोन्में ही सम्मिलित थे। इस प्रकार गाँधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन वास्तविक अर्थों में एक आंदोलन बन गया।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 9. निजी पत्रों और आत्मकथाओं से किसी व्यक्ति के बारे में क्या पता चलता है? ये स्रोत सरकारी ब्योरों से किस तरह भिन्न होते हैं?

उत्तर: निजी पत्रों और आत्मकथाओं से किसी व्यक्ति के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इनसे संबंधित व्यक्ति की विचारधारा एवं उसके जीवन-चरित्र के विषय में पर्याप्त व्यक्तिगत पत्रों में भी अपने विचारों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त नहीं कर सकतें, क्योंकि उन्हें किसी भी पत्र के प्रकाशित हो जाने की आशंका बनी रहती है।

आत्मकथधाओं से भी किसी व्यक्ति के जीवन तथा उसके विचारों के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी जीवनकथा लिखता है, तो उसे आत्मकथा कहा जाता है। किन्तु आत्मकथाओं के अध्ययन से किसी निष्कर्ष को निकालते हुए हमें यह सदैव याद रखना चाहिए कि आत्मकधाओं का लेखन प्राय: स्पृत्ति के आधार पर किया जाता है। उनसे स्पष्ट होता है कि लेखक को क्या याद रहा, वह किन चीजों को महत्त्वपूर्ण समझता था, क्या याद रखना चाहता था अथवा अपने जीवन को औरों की दृष्टि में किस प्रकार दिखाना चाहता था। आत्मकथा का लेखन एक प्रकार से अपनी तसवीर को बनाना है। लेखक को आत्मकथा के लेखन में ईमानदार रहना चाहिए, किन्तु हमें वह सब भी देखने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसे लेखक दिखाना नहीं चाहता, हमें ऐसे विषयों में उसकी चुप्पी के कारणों को समझने का प्रयास करना चाहिएं।

सरकारी ब्योरों में भिन्नता निजी पत्रों एवं आत्मकथा-ओं तथा सरकारी ब्योरों में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। निजी पत्रों और आत्मकथाओं में विभिन्न विचारों और घटनाओं को यधार्थ विवरण मिलता है। किन्तु सरकारी ब्योरों में विचारों एवं घटनाओं का निष्यक्ष विवरण उपलब्ध नहीं होता। हमें जब वे यूरोप से भारत वापस आए, तो उन पर समाजवाद का पर्याप्त प्रभाव था। भारत आनें पर जब उन्होंने जयप्रकाश नारायण, नरेन्द्र देव और एन.जी. रंगा जैसे सुप्रसिद्ध समाजवादी नेताओं के साथ मिलकर कार्य करना प्रारम्भ किया, तो कांग्रेस में समाजवादियों एवं रूढ़िवादियों के मध्य एक खाई-सी उत्पन्न हो गई थी। 1936 ई० में कांग्रेस का अध्यक्ष बनने के बाद नेहरू फासीवाद के कट्टर विरोधी हो गए थे और वे मजदूरों एवं किसानों की माँगों का समर्थन करने लगे थे।

नेहरू के समाजवादी वक्तव्यों से कांग्रेस के रूढ़िवादी नेता इतने अधिक चिन्तित थे कि उन्होंने राजेन्द्र प्रसाद और सरदार पटेल के नेतृत्व में कांग्रेस वर्किंग कमेटी से त्यागपत्र दे देने की भी धमकी दे दी थी। इन दोनों समाजवादी विचारों से प्रभावित युवा वर्ग और रूदढ़िवादी वर्ग के मध्य टक्तराव की स्थिति उत्पन्न होने पर प्रायः गाँधी जी को मध्यस्थ का कार्य करना पड़ता था। इन पत्रों से कांग्रेस की आंतरिक कार्य-प्रणाली तथा राष्ट्रीय आंदोलन के स्वरूप के विषय में भी महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध होती है। इनसे स्पष्ट होता है कि वैचारिक मतभेद होते हुए भी। कांग्रेस के सभी प्रमुख नेताओं का उद्देश्य संगठन में एकता को बनाए रखना था। उल्लेखनीय है कि व्यक्ति-विशेष को लिखे जानेवाले पत्र व्यक्तिगत होते हैं, किन्तु कुछ रूपों में वे जनता के लिए भी होते हैं। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि प्राय: लोग याद रखना चाहिए कि औपनिवेशिक शासन ऐसे तत्वों, जिन्हें वे अपने विरुद्ध समझते थे, पर सदैव कड़ी दृष्टि रखते थे। ऐसे तत्वों एवं उनकी गतिविधियों का विस्तृत उल्लेख हमें सरकारी रिपोर्टों में मिलता है। किन्तु उसे निष्पक्ष नहीं कहा जा सकता। इसका प्रमुख कारण यह है कि औपनिवेशिक अधिकारी ऐसे तत्वों एवं उनकी गतिविधियों को अपने दृष्टिकोण से देखते थे। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत पुलिसकर्मियों एवं अन्य अधिकारियों द्वारा लिखे गए पत्रों एवं रिपोर्टों को गोपनीय रखा जाता था। उल्लेखनीय है कि बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों से गृह-विभाग द्वारा पाक्षिक रिपोर्टे (हर पंद्रह दिन अधवा हर पखवाड़े में तैयार की जानेवाली रिपोर्ट) तैयार की जाने लगी थीं।

इन रिपोर्टों को स्थानीय क्षेत्रों से पुलिस से प्राप्त होनेवाली सूचनाओं के आधार पर तैयार किया

not to be republished © JCERT

जाता था। इन रिपोर्ट से यह भी स्पष्ट होता है कि समकालीन औपनिवेशिक अधिकारी किसी परिस्थिति विशेष को किस प्रकार देखते और समझते थे। राजद्रोह एवं विद्रोह की संभावना स्वीकार करते हुए भी वे इन आशंकाओं को आधारहीन बताकर स्वयं को आश्वस्त करना चाहते थे। नमक सत्याग्रह के काल की पाक्षिक रिपोर्टों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि गृह-विभाग यह स्वीकार करने को कदापि तैयार नहीं था कि महात्मा गाँधी की गतिविधियों को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हों रहा था। उदाहरण के लिए, पुलिस की पाक्षिक रिपोर्टों में आत्मकथाओं से भी किसी व्यक्ति के जीवन तथा उसके विचारों के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। जब कोई व्यक्ति अपनी जीवनकथा लिखता है, तों उसे आत्मकथा कहा जाता है। किन्तु आत्मकथाओं के अध्ययन से किसी निष्कर्ष को निकालते हुए हमें यह सदैव याद रखना चाहिए कि आत्मकथधाओं का लेखन प्राय: स्मृति के आधार पर किया जाता है। उनसे स्पष्ट होता है कि लेखक को क्या याद रहा, वह किन चीजों को महत्त्वपूर्ण समझता था, क्या याद रखना चाहता था अथवा अपने जीवन को औरों की दृष्टि में किस प्रकार दिखाना चाहता था। आत्मकथा का लेखन एक प्रकार से अपनी तसवीर को बनाना है। लेखक को आत्मकथा के लेखन में ईमानदार रहना चाहिए, किन्तु हमें वह सब भी देखने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसे लेखक दिखाना नहीं चाहता; हमें ऐसे विषयों में उसकी चुप्पी के कारणों को समझने का प्रयास करना चाहिए।

सरकारी ब्योरों में भिन्नता निजी पत्रों एवं आत्मकधाओं तथा सरकारी ब्योरों में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। निजी पत्रों और आत्मकथधाओं में विभिन्न विचारों और घटनाओं को यथार्थ विवरण मिलता है। किन्तु सरकारी ब्योरों में विचारों एवं घटनाओं का निष्पक्ष विवरण उपलब्ध नहीं होता। हमें नमक यात्रा का चित्रण एक ऐसे नाटक एवं करतब के रूप में किया जा रहा था, जिसका प्रयोग ब्रिटिश शासन के विरुद्ध ऐसे लोगों को गोलबंद करने के लिए किया जा रहा था, जो वास्तव में इस शासन के विरुद्ध आवाज उठाने के इच्छुक नहीं थे, क्योंकि वे इस शासन के अंतर्गत सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे। पुलिस की पाक्षिक रिपोर्टों के अनुसार यह भारतीय नेताओं को एक हताश प्रयास था।

इस प्रकार, सरकारी ब्योरों के प्रत्येक विवरण को यधार्थ घटनाक्रम का वास्तविक उल्लेख नहीं माना जा सकता। वास्तव में, इन विवरणों से ऐसे अफसरों कीं आशंकाओं एवं बेचैनियों का परिचय मिलता है, जो किसी आंदोलन को नियंत्रित कर पाने में स्वयं को असमर्थ अनुभव कर रहे थे तथा जो उसके प्रसार को लेकर अत्यधिक चिंतित थे। वे यह निर्णय लेने में असमर्थ थे कि गाँधी जी को बंदी बनाया जाना चाहिए अधवा नहीं। वे यह भी नहीं समझ पा रहे थे कि गाँधी जी को बंदी बनाए जाने का परिणाम क्या होगा। इस प्रकार निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि निजी पत्रों और आत्मकथाओं के विवरण सरकारी ब्योरों के विवरणों से अनेक रूपों में भिन्न होते हैं।

सीमा तक सही अनुमान लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए गाँधी जी के पत्रों एवं उनकी आत्मकथा से गाँधी जी एवं उनकी विचारधारा को समझने में महत्त्वपूर्ण सहायता मिलती है। व्यक्तिगत पत्रों से हमें संबंधित व्यक्ति के व्यक्तिगत विचारों का परिचय मिलता है। पत्रों में लेखक अपने क्रोध, पीड़ा, असंतोष, बेचैनी, आशाओं एवं हताशाओं को व्यक्त कर सकता है, किन्तु सार्वजनिक वक्तव्यों में वह ऐसा नहीं कर सकता। उल्लेखनीय है कि गाँधी जी द्वारा अपने पत्र 'हरिजन' में लोगों से मिलने वाले पत्रों को प्रकाशित किया जाता था।

जवाहरलाल नेहरू को राष्ट्रीय आंदोलन की अवधि में अनेक लोगों नें पत्र लिखे थे। नेहरू जी ने उन पत्रों कों संकलित करके उस संकलन को 'ए बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स (पुराने पत्रों का पुलिंदा) के नाम से प्रकाशित कराया था। इन पत्रों से पता लगता है कि 1920 के दशक में जवाहरलाल नेहरू समाजवादी विचारों से प्रभावित होने लगे थे।

© JCERT not to be republished